http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 1-4

Article ID:474

भारतीय कृषि का नवचिन्तन: किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की भूमिका

स्वाति शर्मा

सहायक प्राध्यापक (एबीएम)
एसपीई एग्रीबिज़नेस मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय,
नवसारी, गुजरात

*अनुरूपी लेखक
स्वाति शर्मा*

सन् 2023 में भारत दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला लोकतांत्रिक देश बन चुका है, जिसकी आबादी 1.42 अरब तक पहुँच गई है। अनुमान है कि 2030 तक यह संख्या 1.5 अरब से भी ऊपर पहुँच जाएगी। इतनी तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या देश की सबसे अहम आवश्यकता खाद्य सुरक्षा पर असाधारण दबाव डालने वाली है। हालाँकि शहरीकरण और तकनीकी प्रगति तेजी से बढ़ रहे हैं, फिर भी कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की मुख्य धुरी बनी हुई है। यह न केवल आधे से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करती है, बल्कि सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 16.5 प्रतिशत का योगदान भी करती है। 2022 में भारतीय कृषि बाज़ार का मूल्य जहाँ 435.9 अरब अमेरिकी डॉलर था, वहीं 2028 तक इसके 580.82 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है, यानी लगभग 4.9 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर।

फिर भी, इन उत्साहजनक आँकड़ों के पीछे भारतीय कृषि की एक गहरी चुनौती छिपी है। देश के 86.2 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत श्रेणी में आते हैं, जिनकी ज़मीन दो हेक्टेयर से कम है। सीमित संसाधन, बाज़ार तक पहुँच की कठिनाइयाँ और लगातार घटती लाभप्रदता के बीच भी यही किसान भारत की खाद्य सुरक्षा की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं।

भारतीय कृषि क्षेत्र की चुनौतियाँ

भारत का कृषि परिदृश्य जितना समृद्ध और विविध है, उतना ही यह अनेक गहरी और जटिल चुनौतियों से घिरा हुआ है, जो इसकी दीर्घकालिक स्थिरता और विकास पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जैसे अनियमित मानसून, सूखा और बाढ़ न केवल फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं बल्कि किसानों की आजीविका को भी अस्थिर बना देते हैं। छोटे और बिखरे हुए भू-खंड, जहाँ अधिकांश किसान दो हेक्टेयर से कम ज़मीन पर खेती करते हैं, उत्पादन बढ़ाने की क्षमता को सीमित करते हैं और आधुनिक तकनीक अपनाने में बाधा डालते हैं।

वित्तीय संसाधनों की कमी इस स्थिति को और विकट बना देती है। ऊँची ब्याज दरों और संस्थागत ऋण तक सीमित पहुँच के कारण किसान अक्सर साहूकारों पर निर्भर हो जाते हैं। वहीं, बाज़ार की खामियाँ बिचौलियों पर अत्यधिक निर्भरता, अपर्याप्त भंडारण क्षमता और कमजोर परिवहन व्यवस्था लाभप्रदता घटाकर किसानों को फसलोत्तर भारी नुकसान उठाने पर मजबूर करती हैं।

हालाँकि उन्नत कृषि तकनीकें और आधुनिक समाधान उपलब्ध हैं, लेकिन उनकी ऊँची लागत और कम जागरूकता के चलते वे अधिकांश किसानों की पहुँच से बाहर हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण मज़दूरी का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कृषि श्रमबल की कमी को और गहरा करता है। साथ ही, नीतिगत कमज़ोरियाँ और अधूरी अवसंरचना जैसे अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ, शीतगृहों का अभाव और ग्रामीण संपर्क साधनों की कमजोरी कृषि विकास को निरंतर बाधित करती हैं।

किसान उत्पादक संगठन (FPOs): आवश्यकता और महत्व

किसान उत्पादक संगठन (FPOs) आज ग्रामीण भारत के लिए एक परिवर्तनकारी पहल बनकर उभरे हैं। ये संगठन उन छोटे और सीमांत किसानों की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं, जो संख्या में अधिक होने के बावजूद संसाधनों और बाज़ार तक सीमित पहुँच के कारण लगातार चुनौतियों का सामना करते हैं। यही किसान भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, फिर भी लाभप्रदता और स्थिरता के मामले में सबसे अधिक असुरक्षित रहते हैं।

FPO क्या है?

FPO किसानों द्वारा गठित एक विधिक रूप से मान्यता प्राप्त संस्था होती है, जिसे प्रायः उत्पादक कंपनी, सहकारी समिति या सामूहिक संगठन के रूप में संगठित किया जाता है। ये सहकारिता मॉडल के समान होते हैं, लेकिन इनमें अधिक लचीलापन, व्यावसायिक प्रबंधन और आधुनिक कार्यप्रणालियाँ अपनाने की क्षमता होती है। समान उद्देश्य और हित वाले किसानों को एक मंच पर लाकर, FPO सामूहिक कार्यवाही को सशक्त करते हैं, जिससे न केवल उत्पादन और संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है, बल्कि किसानों की बाज़ार में सौदेबाजी की शक्ति भी बढ़ती है।

FPOs की आवश्यकता क्यों है?

भारतीय कृषि की संरचनात्मक सीमाएँ FPOs की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। देश के लगभग 86 प्रतिशत किसान दो हेक्टेयर से कम भूमि पर खेती करते हैं। इतनी छोटी ज़मीन पर उत्पादन की लागत घटाना और पैमाने की अर्थव्यवस्था पाना बेहद कठिन है। परिणामस्वरूप, किसान न तो गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरक और उपकरण सस्ती दरों पर खरीद पाते हैं और न ही अपने उत्पादों को उचित दाम पर बेच पाते हैं। इस बिखरे हुए तंत्र के कारण उनकी लाभप्रदता घटती है, बिचौलियों पर निर्भरता बढ़ती है और वे जलवायु व बाज़ार की अनिश्चितताओं के प्रति अधिक असुरक्षित हो जाते हैं।

इसी अंतर को FPOs दूर करते हैं। वे किसानों को सामूहिक रूप से इनपुट (बीज, खाद आदि) कम लागत पर उपलब्ध कराते हैं और उत्पाद को थोक में बेचने का अवसर देते हैं। इससे किसानों को बेहतर मूल्य मिलता है और बिचौलियों द्वारा किए जाने वाले शोषण में कमी आती है। चित्र 1 में FPOs में पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकताओं को दर्शाया गया है।

चित्र 1: पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकताओं

स्रोत: NABARD रिपोर्ट, 2019-20

FPOs का व्यापक महत्व

FPOs केवल इनपुट आपूर्ति और विपणन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे क्षमता निर्माण और ज्ञान हस्तांतरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, विस्तार सेवाओं और डिजिटल प्लेटफार्म तक पहुँच मिलती है। इससे वे सतत कृषि पद्धतियाँ अपनाकर उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, मूल्यवर्धन और सहायक गतिविधियों (जैसे दुग्ध उत्पादन, प्रसंस्करण आदि) के ज़रिए आय के नए स्रोत बना सकते हैं और जलवायु व बाज़ार की अनिश्चितताओं का बेहतर सामना कर सकते हैं।

इसके अलावा, FPO किसानों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ने का भी एक प्रभावी माध्यम हैं। इनके ज़रिए किसानों की ऋण योग्यता (creditworthiness) बढ़ती है और वे बैंकों व वित्तीय संस्थाओं के साथ बेहतर शर्तों पर सौदेबाजी कर पाते हैं।

संस्थागत सहयोग और प्रोत्साहन

FPOs की इस परिवर्तनकारी क्षमता को देखते हुए सरकार और निजी क्षेत्र, दोनों इनके विस्तार और सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। लघु कृषक कृषि-व्यवसाय संघ (SFAC) इनके गठन और विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जैसे इक्विटी ग्रांट, क्रेडिट गारंटी और ई-नाम (e-NAM) जैसे प्लेटफार्म से जोड़ना। इसके अलावा, नाबार्ड (NABARD), राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC) और एपेडा (APEDA) जैसी संस्थाएँ ऋण उपलब्ध कराने, प्रशिक्षण, निर्यात सुविधा और आवश्यक अवसंरचना के विकास में अहम सहयोग प्रदान कर रही हैं। तालिका 1 में भारत में FPO प्रमोटर्स की सूची दर्शाई गई है।

तालिका 1: भारत में FPO प्रमोटर्स की सूची

क्रमांक	प्रमोटिंग एजेंसियाँ	संख्या
1	SFAC	902
2	NABARD	2086
3	राज्य सरकार (RKVY या विश्व बैंक फंड के माध्यम से वित्त पोषित)	510
4	NRLM कार्यक्रम (MoRD)	131
5	अन्य संगठन/ट्रस्ट/फाउंडेशन	1371
कुल		5000

स्रोत: कुमार एट अल., 2023

एफपीओ के माध्यम से भारतीय कृषि का पुनर्परिभाषीकरण

किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organizations – FPOs) सामूहिक शक्ति का लाभ उठाकर भारत की कृषि व्यवस्था को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। संसाधनों को एकत्रित कर किसान पैमाने की अर्थव्यवस्था (economies of scale) का लाभ उठाते हैं, जिससे बीज, उर्वरक और मशीनरी जैसे कृषि इनपुट की लागत में उल्लेखनीय कमी आती है। यही सामूहिकता उन्हें बाज़ार में मजबूत सौदेबाजी की क्षमता प्रदान करती है, क्योंकि संगठित रूप से बेचा गया उत्पादन किसानों को बेहतर दाम सुनिश्चित करता है।

FPOs किसानों को केवल लागत कम करने का अवसर ही नहीं देते, बल्कि उन्हें आधुनिक तकनीक और औपचारिक वित्तीय प्रणाली तक पहुँच भी उपलब्ध कराते हैं। इनके माध्यम से छोटे और सीमांत किसान वे उपकरण, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्राप्त कर पाते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से उनके लिए संभव नहीं होता। इसके अलावा, FPOs किसानों को मूल्यवर्धन के लिए प्रेरित करते हैं – जैसे ग्रेडिंग, प्रसंस्करण और पैकेजिंग – जिससे न केवल उत्पाद की गुणवत्ता बेहतर होती है, बल्कि उनकी आय और लाभप्रदता में भी वृद्धि होती है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि FPOs किसानों के लिए जोखिम प्रबंधन का सुरक्षा कवच बनते हैं। सामूहिक संरचना के चलते जोखिम सभी सदस्यों में बँट जाता है, जिससे वे जलवायु अनिश्चितताओं और बाज़ार की

अस्थिरता का अधिक मजबूती से सामना कर सकते हैं।

FPOs की इस परिवर्तनकारी क्षमता को देखते हुए भारत सरकार ने एक केंद्रीय क्षेत्र योजना लागू की है, जिसके तहत 10,000 नए FPOs की स्थापना की जाएगी। इन संगठनों को पाँच वर्षों तक पेशेवर मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाएगा ताकि वे दीर्घकालिक रूप से मजबूत, टिकाऊ और सफल बन सकें।

आगे की राह में अवसर और चुनौतियाँ

किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) का भविष्य अपार संभावनाओं से भरा हुआ है, लेकिन उनकी यात्रा चुनौतियों से मुक्त नहीं है। कई FPOs को प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी के कारण प्रबंधन कौशल की कमी का सामना करना पड़ता है, जबकि वित्तीय सीमाएँ उनके विस्तार और सेवाओं की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। सुलभ और बिना गिरवी रखे ऋण तक पहुँच अभी भी एक बड़ी कमी है, जिसके चलते अनेक किसान समूह अब भी अनौपचारिक वित्तीय स्रोतों पर निर्भर रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, परिवहन नेटवर्क, भंडारण सुविधाएँ और प्रसंस्करण इकाइयों जैसी पर्याप्त अवसंरचना का अभाव उनकी दक्षता और बाज़ार तक पहुँच को सीमित करता है। साथ ही, किसानों को सामूहिकता के दीर्घकालिक लाभों के प्रति अधिक जागरूकता और समझ की आवश्यकता है, ताकि वे इन संगठनों में विश्वास और सक्रिय भागीदारी दिखा सकें।

इन चुनौतियों से पार पाने और FPOs की पूर्ण क्षमता को साकार करने के लिए आवश्यक है कि सरकार और अन्य हितधारक सहायक नीतियाँ, लक्षित क्षमता-विकास कार्यक्रम और मज़बूत व भरोसेमंद बाज़ार संपर्क विकसित करें। यही कदम FPOs को भारतीय कृषि परिवर्तन की मजबूत आधारशिला बना सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत की कृषि आज एक निर्णायक मोड़ पर है, जहाँ इसे बढ़ती जनसंख्या को भोजन प्रदान करने के साथ-साथ करोड़ों किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने की चुनौती का सामना करना है। किसान उत्पादक संगठन (FPOs) इस चुनौती में एक आशा की किरण के रूप में उभर रहे हैं, जो छोटे भूखंडों और बड़े बाज़ार अवसरों के बीच की खाई को पाटते हैं।

FPOs किसानों को सामूहिक शक्ति के माध्यम से सशक्त बनाकर न केवल उनकी आय बढ़ाने का वादा करते हैं, बल्कि सतत और टिकाऊ कृषि विकास की दिशा भी सुनिश्चित करते हैं। सही सहयोग और समर्थन के साथ, FPOs भारतीय कृषि को जीवन-यापन की जद्दोजहद से निकालकर, सहिष्णुता, नवाचार और साझा समृद्धि की कहानी में बदल सकते हैं।

इस प्रक्रिया में, वे ग्रामीण भारत को पुनर्परिभाषित करने की क्षमता रखते हैं और किसानों की आय को दोगुना करने के सपने को साकार कर सकते हैं।